वर्षा वन अनुसंधान संस्थान में प्रदर्शी ग्राम कार्यक्रम के अंतरगत बांस हस्तशिल्प पर प्रशिक्षण कार्यशाला

वर्षा वन अनुसंधान संस्थान, जोरहाट द्वारा स्थापित प्रदर्शन ग्राम के प्रत्येक घर-बगीचे में बांस के रोपण को ध्यान में रखते हुए संस्थान ने दिनांक 22 से 26 जुलाई, 2013 तक बांस हस्तशिल्प पर पाँच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया जिसका उद्देश्य था बांस के द्वारा बनाये जा सकने वाले विभिन्न हस्तशिल्प। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में आईसीएफआरई-प्रदर्शी ग्राम (ICFRE-Demo Village) के कुल 16 प्रशिक्षणार्थियों ने भाग लिया जिनमें स्वंयम सहायता समूह से आई हुई महिलाएं भी शामिल थीं। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम के उद्घघाटन समारोह में जाने-माने हस्त शिल्पकार श्री मोहन सैकिया, डॉ. आर. के. बोरा, समूह समन्वयक (अनु.) व अन्य वैज्ञानिक उपस्थित थें। उदघाटन भाषण में डॉ. बोरा ने सभी प्रशिक्षार्थियों का स्वागत किया और इस प्रशिक्षण से सम्पूर्ण लाभ उठाने के लिए प्रेरित किया।सभा को विस्तार प्रभाग के प्रमुख श्री राजिब कुमार कलिता ने भी संबोधित किया। बांस समग्र केंद्र (Bamboo Composite Centre) के प्रभारी डॉ. तिलक चन्द्र भूइंया ने अपने संक्षिप्त व्याख्यान में बांस के हस्तशिल्प में हो रहे विकास के बारे में जानकारी प्रदान की। डॉ. प्रवीण कुमार वर्मा, नोडल अधिकारी, प्रदर्शी ग्राम कार्यक्रम ने सभी प्रशिक्षणार्थियों को इस कार्यशाला से ज्यादा से ज्यादा लाभ उठाने के लिए प्रोत्साहित किया।

कार्यशाला के प्रारंभ में शिवसागर जिले से विशेष रूप से आमंत्रित असम के प्रसिद्ध हस्तशिल्पकार श्री मोहन सैकिया ने बांस हस्तशिल्प की प्रारंभिक बारीकियों को उपस्थित प्रशिक्षणार्थियों के समक्ष रखा कि कैसे एक साधारण बांस को मूल्यवान कलात्मक वस्तुओं में बदला जा सकता है।

प्रशिक्षणकारियों ने प्रशिक्षक की निगरानी में बांस के द्वारा बनायी जाने वाली अनेक प्रकार की घरेलु वस्तुओं का निर्माण किया जिनमें बांस निर्मित पलंग, आराम दायक कुर्सियां, मेज, कार्यालय में प्रयुक्त होने वाली टोकरियां आदि शामिल हैं। इसके अलावा उन्होंने कई तरह की कलाकारियों से निर्मित बांस ट्रे, बांस की चूड़ियां, पुष्प दस्ते एवं कई अन्य तरह की सजावटी सामग्रियों का भी निर्माण किया। कार्यक्रम के मध्य में हरियाणा के पूर्व प्रधान मुख्य वन संरक्षक डॉ. जे. के. रावत ने प्रशिक्षणार्थियों द्वारा बनाई गई विभिन्न वस्तुओं का अवलोकन किया और उनकी सराहना की।

समापन समारोह में आयोजित सभा में संस्थान के निदेशक डॉ. एन. के. बिष्ट, डॉ. आर. के. बोरा, समूह समन्वयक (अनु.), डॉ. ए. पी. सिंह, वैज्ञानिक-ई, श्री आर. के. कलिता, वैज्ञानिक-डी, डॉ. रंजीत कुमार, वैज्ञानिक-डी, डॉ. विपिन प्रकाश, वैज्ञानिक-डी तथा अन्य वैज्ञानिक, अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित थें। सभा के पहले डॉ. टी. सी. भूइयां ने सभा में उपस्थित सभी का स्वागत किया और कार्यशाला में भाग लेने वाले प्रशिक्षार्थियों को उनके काम की सराहना की। उन्होंने इस 5 दिवसीय कार्यशाला के उद्देश्य के बारे में सभा को अवगत कराया। उन्होंने

प्रशिक्षार्थियों को उनके उत्साह को धन्यवाद दिया और यह भी कहा कि यह प्रशिक्षण तभी लाभदायी हो सकता है जब वे कार्यशाला में सीखे हुए काम अपने-अपने घर में उपयोग करते रहेंगे।

प्रशिक्षणार्थियों में से श्री धीरेन शर्मा ने इस प्रशिक्षण की सराहना की और सभी प्रशिक्षार्थियों की तरफ से संस्थान द्वारा इस तरह की पहल करने का धन्यवाद दिया। उन्होंने यह भी विश्वास दिलाया कि बांस हस्तशिल्प को वे आजीविका के एक साधन के रूप में इस्तमाल करेंगे।

डॉ. ए. पी. सिंह, वैज्ञानिक-ई ने इस प्रशिक्षण में श्री मोहन सैकिया द्वारा सिखाये गये तकनीकों का लाभ लेने के लिए कहा। डॉ. आर. के. बोरा, वैज्ञानिक-ई ने बांस से बनी सामग्रियों के वाणिज्यक पहलुओं पर प्रकाश डाला।

विशेषज्ञ के रूप आमंत्रित श्री मोहन सैकिया ने प्रशिक्षणार्थियों को बाज़ार के बारे में बताते हुए कहा कि जब हमारें पास अच्छे गुणवत्ता वाले सामग्री होंगी तब उनकी मांग बढ़ती जायेगी। बांस से बने सामग्रियों के प्रति रूचि और धीरे-धीरे बढ़ती मांग के बारे में भी प्रशिक्षणार्थियों को अवगत कराया। प्रशिक्षार्थियों को उत्साहित करते हुए उन्होंने यह भी कहा कि काम के प्रति निष्ठा और श्रम से जो भी आगे बढ़ेगा उसकी सामग्री की खपत स्थानीय रूप में ही हो सकती है। उन्होंने प्रशिक्षार्थियों को केंद्र एवं राज्य सरकार से मिलने वाले सुविधाओं के बारे में अवगत कराया।

अंत में संस्थान के निदेशक डॉ. एन. एस. बिष्ट ने प्रशिक्षार्थियों के द्वारा बनाये गये बांस के विभिन्न उत्पादों की सराहना की और उन्हें आकर्षणीय बताया। उन्होंने व्यक्त किया कि उनके बनाये हुए उत्पाद की खपत स्थानीय रूप में ही भरपूर हो सकता है। इससे पहले निदेशक महोदय ने प्रशिक्षार्थियों को प्रमाणपत्र पत्र वितरित किये और उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की। सभा का अंत डॉ. रंजीत कुमार के धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ।

बांस हस्तशिल्प पर प्रशिक्षण कार्यशाला 2013

बांस हस्तशिल्प पर प्रशिक्षण कार्यशाला 2013

बांस हस्तशिल्प पर प्रशिक्षण कार्यशाला 2013

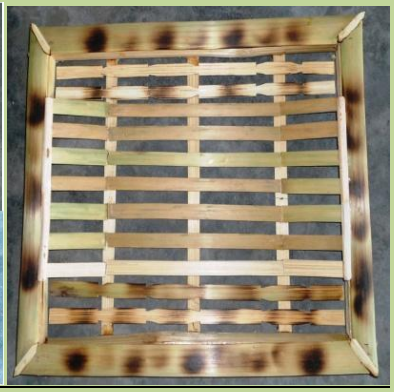

बांस हस्तशिल्प पर प्रशिक्षण कार्यशाला 2013

बांस हस्तशिल्प पर प्रशिक्षण कार्यशाला 2013